उपसंहार

डॉ. रामदरश मिश्र जी का साहित्य बहुमुखी है। उनके प्रथम आँचलिक उपन्यास 'पानी के प्राचीर' का अनुशीलन यहाँ किया गया है

प्रथम अध्याय में रामदरश मिश्रजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। हिंदी के सुविख्यात यथार्थवादी और आँचलिक कथाकार डॉ. रामदरश मिश्रजी का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व गाँव की मिट्टी की गंध से महकता है। उनका बचपन गाँव में गुजरा लेकिन शिक्षा और जीविका के लिए वे नगर आए और बाद में नगर में ही रहे। नगर की धकापेल में भी वे अपने ग्रामीण संस्कारों को नहीं भूले, अपितु अपने साहित्यिक माध्यम से उन्हें न सिर्फ सुरक्षित रखा, उन्हें संवर्धित करने का प्रयास किया है। उनके साहित्यकार का प्रारंभ कवि के रूप में हुआ पर बाद में उनकी विशेष रूचि कथा साहित्य की ओर रही। उनका व्यक्तिगत जीवन एकांगी रहा परंतु उनका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुमुखी रहा। नाटक को छोडकर उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, आत्मकथा जैसी प्राय: सभी विधाओं में समृध्द साहित्य रचना की। इस लेखन प्रक्रिया में उन्होंने अपने संस्कारशील अध्यापक को भी सदैव जीवंत रखा ।स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों में उनकी विशिष्ट पहचान है। कथा, साहित्य विशेषकर उपन्यास और कविता में उनका योगदान महत्वपूर्ण है।

भारतीय संस्कारों तथा ग्रामीण जीवन की ताजगी उनके जीवन, व्यक्तित्व और साहित्य को निरंतर प्रसन्नचित्त बनाती रही है।

द्वितीय अध्याय में उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन किया है।

आँचलिक कथाकार किसी एक अंचल का कथावस्तु के रूप में चयन करता है। कथानक अंचल केंद्रित होता है ,इसलिए उस अंचल विशेष के जन उनके क्रियाकलाप, घटनाएँ, उनकी परंपरा, स्वार्थ, निरीहता, अंधश्रध्दाएँ, जाति भेद, प्रगति,विश्वास आदि कथानक के अविभाज्य अंग बन जाते हैं तथा अंचल विशेष की प्राकृतिक विभिन्न गतिविधियों का भी वहाँ के मौसम, अकाल, बाढ आदि के रूप में आनेवाली प्राकृतिक विपदाओं का भी सम्यक् चित्रण किया जाता है। आँचलिक उपन्यासों की कथा योजना की विशेषता यह है कि उनमें प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी ताकतों का संघर्ष सतत बना रहता है। यथार्थ के प्रति गहरी आस्था आँचलिक कथाकारों की महत्वपूर्ण विशेषता है।

'पानी के प्राचीर' का लेखक रामदरश मिश्र अपने उपन्यास के अंचल से भलिभाँति परिचित है। गोरखपुर जिले की दो नदियों से घिरे हुए एक पिछडे भू-भाग की कहानी आलोच्य उपन्यास में कही गयी है। उपन्यास की भूमिका में उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि, यह विशाल भू-भाग युगों से अपनी सारी हरियाली दो नदियों की भूखी धाराओं को लुटाकर विवशता अभाव और संघर्ष के रूप में शेष रह ग्या है। स्थानीय जीवन के समस्त सत्यों और पक्षों के संश्लिष्ट रूप को उभारने के प्रयत्न में कथानक एक दिशा-प्रवाही नहीं है वह अनेक कोणों से उभरती जीवन कथाओं की संश्लिष्ट बुनावट है। उपन्यास की कहानी स्वाधीनता प्राप्ति तक की है। उपन्यास की मुख्य कथा सत् और असत् के संघर्ष की कहानी है। सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संघर्ष भी इसके साथ जुडे हुए हैं। प्राकृतिक प्रकोप का शिकार यह ग्रामांचल, जमींदारों, पूँजीपतियों और पुलिस के शोषण और अत्याचार का शिकार है। गाँव में अत्यधिक फूट, आपसी वैरभाव बडी मात्रा में हैं। उसके अंध:श्रध्दालू संस्कार उसके पिछडेपन के लिए उत्तरदायी हैं। इन सारी दु:स्थितियों में पले हुए इस अंचल की आत्मा छटपटाती रहती है। निराशा के अंधेरे ने इस अंचल को ग्रास रखा है। परंतु उपन्यासकार आशावादी भी है। उपन्यासकार ने नीरू, संध्या, मलिंद, रग्घूबाबा, फेंकू जैसे पात्रों के माध्यम से अपना आशावाद अभिव्यक्त किया है। ये पात्र नयी चेतना के प्रतीक बनकर आते हैं और आशावादी संदेश के साथ उपन्यास समाप्त हो गया है।

पानी की दीवारें टूटेंगी ! बाहर से नयी रोशनी आएगी !! खेतों में नये सपने खिलेंगें !!!

घटनाओं की बहुलता, पात्रों की बहुलता और उनके अपने-अपने कथाभाग आदि के कारणों से कथा एक सूत्र में नहीं बढती है तो उसमें एक बिखराव उत्पन्न हुआ है। रामदरश मिश्र ने निम्नलिखित पंक्तियों में इस तथ्य को स्पष्ट किया है।

''कथानक एक दिशा प्रवाही नहीं है, वह अनेक कोणों से उभरती जीवन कथाओं की संश्लिष्ट बुनावट है।''

'पानी के प्राचीर' उपन्यास में अनेक पात्रों की विभिन्न दिशागामी कथाएँ हैं। नीरू की कथा केंद्रिय कथा का आभास देती है और सुमेश पांडे, संध्या, मलिंद, महेश, बिंदिया, गेंदा, मुखिया आदि से संबंधित विभिन्न कथा सूत्रों को संश्लिष्ट रूप देने का सफल प्रयास है।

उपन्यास में अनेक कथाओं, उपकथाओं को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास है, परंतु कथागत

बिखराव में कथा की अनेक दिशाएँ हैं। कथावस्तु के बिखराव का प्रमुख कारण है किसी ठोस केंद्रिय कथा की अनुपस्थिति। यहाँ कथाकार की दृष्टि में अंचल केंद्रिय है और कथावस्तु में पांडेपुरवा के जीवन वैविध्य को प्रकट करनेवाले अनेक खंड चित्रों की भरमार है।

इस प्रदेश की व्यापक पृष्ठभूमि पर जो मानव मूल्यों और उच्चतर जीवन सत्यों के जो रूप उभरे हैं वे एक देशीय न होकर पूरे समाज के हैं। पर्याप्त प्रचार न मिलने के बावजूद भी पूर्वी अंचल को कौशलपूर्ण ढंग से उभारने तथा छटपटाती हुई मानवीय आत्मा के तंतुओं को बारीकी से पडताल करने के कारण 'पानी के प्राचीर' ,एक महत्वपूर्ण कृति है।

तृतीय अध्याय में 'पानी के प्राचीर' उपन्यास के पात्र और उनके चरित्र-चित्रण पर विवेचन किया है। आँचलिक उपन्यास के विधान के अनुसार पात्रों की बहुलता के यहाँ दर्शन होते हैं। अध्याय के प्रारंभ में पात्रों की दृष्टि से आँचलिक उपन्यास की कुछ विशेषताओं का विवेचन किया गया है। और उसके उपरांत विभिन्न पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है। प्रारंभ में पुरूष पात्रों में से नीरू, मलिंद, नेता गनपति, हरिजन नेता फेंकू, महेश, मुखिया,बैजू आदि पात्रों का विस्तृत चरित्र-चित्रण किया गया है। शेष पुरूष पात्रों के संबंध में सामान्य जानकारी दी गयी है। इनमें प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी पात्रों का समावेश है।

नारी पात्रों में बिंदिया, गेंदा, गुलाबी और संध्या का विस्तृत चरित्र-चित्रण किया गया है। इसमें इन पात्रों के चरित्र की बारिकियों का विवेचन किया गया है। नीरू प्रधानपात्र है और नायकत्व का आभास देता है। वह संपूर्ण उपन्यास में छाया हुआ है। वह आदर्शवादी है। नीरू पढनें में होशियार है और उसमें गहरी मानवीय करूणा और उदारता है। शोषण और दमन का खुलकर विरोध करता है पर, उसके चरित्र की विडंबना है कि वह स्वयं एक दिन उस अमानवीय व्यवस्था का अंग बन जाता है। परंतु इससे उसके मन को चैन नहीं मिलता वह स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बन जाता है। नीरू के रूप में लेखक ने एक आशावादी, आस्थावान व्यक्ति का चित्र खींचा है। मलिंद प्रगतिशीलता का आभास देता है। अपने स्वार्थों को सिध्दांत का जामा पहनाता है। गाँव के सुधार के बारेंमें बहुत बातें करता है परंतु अपनी कथनी को करनी में ढाल नहीं सकता। अंत नें गोरखपुर जाकर वकील बनता है। और गांव से उसका कोई रिश्ता ही नहीं रह जाता। मुखिया, महेश प्रतिक्रियावादी पात्र हैं। प्रारंभ सें अंत तक वे कुव्यवहार और हथकंडे ही करते हैं। उनका जीवन विद्रुपताओं से भरा हुआ है। मुखिया अवसरवादी है तो महेश षडयंत्रकारी है। बैजू गाँव का गुंडा है और गाँव भर में बदनाम परंतु बिंदिया और गुलाबी के प्रति उसका व्यवहार उसके चरित्र को एक गरिमा प्रदान करता है। विधवा गुलाबी को उसकी संतान सहित स्वीकारने के पवित्र कार्य के लिए नीरू की बधाई का पात्र

बन जाता है। अन्य पुरूष पात्रों की भी झलक दिखाई है। नारी पात्रों में बिंदिया चमारीन जो बैजू की रखैल है, सबकी निर्भत्सना का शिकार बनती है पर उससे विचलित नहीं होती। अपना घर उजडते समय एकदम तीखी और ज्वालामुखी लगती है और गाँव के अधिकांश लोगों के नकाब उलटती है। गेंदा दहेज प्रथा का शिकार है। अनमेल विवाह के परिणामस्वरूप शीघ्र ही विधवा होती है और वैधव्य का जीवन भोगती हुई गंभीर बन जाती है। शामधारी की विधवा पत्नी गुलाबी समाज के वासना के कीडों से बचने के लिए बैजू का आश्रय लेती है। इस पापाचार के लिए शोर मचाने पर तैश में आकर एक एक करके सबका पर्दा फाश करती है। संध्या के चरित्र में परिवर्तन है। अन्य छोटे-नारी पात्रों का भी परिचय दिया गया है।

उपन्यास के पात्र अपने-अपने वर्ग के प्रतिनिधि हैं, फिर भी उनकी अपनी वैयक्तिक विशिष्टता भी है। मिश्रजी के पात्रों को अच्छे और बुरे इन दो खानों में बाँटा जा सकता है। बुरे सदैव बुरे हैं, अच्छे सदैव अच्छे ही रहते हैं। लेखक ने गांव के लोगों की विकृतियों का बडी निर्ममता से चित्रण किया है। फिर भी इनके प्रति लेखक की गहरी सहानुभूति है। लेखक ने संघर्षशील चेतना को लोगों की क्रियाशीलता में खोजने का प्रयत्न किया है। इस उम्मीद से कि शायद अब भी कुछ हो जाय। 'पानी के प्राचीर' एक पिछडे हुए लोगों के जीवन की इसी उम्मीद की रचनात्मक तलाश है। अंचल की सच्चाइयों को बहुविध रूप में प्रकट करने के लिए उपन्यास में बहुपात्रों की योजना की है। चरित्र-चित्रण में प्रतीकात्मकता का भी परिचय मिलता है। लेखक पात्र और चरित्र निरूपण में पूर्णत: सफल हैं।

चतुर्थ अध्याय में आँचलिकता के संदर्भ में देशकाल वातावरण का विवेचन है। आँचलिक उपन्यासों में देशकाल और वातावरण का तत्व एक प्रकार से प्राणतत्व का काम करता है। भौगोलिक परिवेश अंचल को विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करता है। प्राकृतिक वातावरण, प्राकृतिक दृश्यों-प्रात:,संध्या, रात्रि,विभिन्न ऋतुओं, खेतों-खलिहानों आदि से संबंधित होता है और सामाजिक परिवेश उस अंचल विशेष के लोगों के रहन-सहन की विशेषताओं, उनकी परंपरागत मान्यताओं, तीज-त्यौहारों, पर्व-उत्सवों, तथा सांस्कृतिक निरूपण से संबंधित होता है।

प्रस्तुत अध्याय में अंचल, आँचलिक और आँचलिकता आदि की व्याख्या की गयी है और उसके संबंध में विभिन्न विद्वानों के मतमतांतर प्रस्तुत किये गये हैं। डॉ, रामदरश मिश्रजी का 'पानी के प्राचीर' एक आँचलिक उपन्यास है जिसमें गोरखपुर जिले की दो नदियों राप्ती और गौरा से घिरे हुए एक पिछडे भू-भाग की कहानी प्रस्तुत की गयी है। यह विशाल भू-भाग युगों से अपनी सारी हरियाली राप्ती और गौरा दो नदियों की भूखी धाराओं को लुटाकर विवशता अभाव और संघर्ष के रूप में शेष रह गया है। इस भू-भाग का नाम

है पांडेपुरवा। इस अंचल का बाहर की दुनिया के साथ कोई जीवंत और रचनात्मक संबंध नहीं रह गया है। बंधे हुए जल की भाँति गांव का जीवन ठहर गया हैं। प्रारंभ में उस अंचल विशेष के प्राकृतिक परिवेश का चित्रण किया गया है। उपन्यास का प्रारंभ ही फाल्गुनी पौर्णिमा की चांदनी रात के वातावरण से हुआ है। होली के पर्व पर सभी एक-दूसरे पर रंग फेंकते हैं। होली के अतिरिक्त अन्य अनेक उत्सवों का भी आयोजन किया जाता है जैसे नागपंचमी, दशहरा आदि। ये त्यौहार सारे गांव में जान डाल देते हैं। अंचलवासियों के लिए हर ऋतु एक नया जीवन नया अनुभव लाती है। प्राकृतिक दृश्यों तथा लोंगों के मनोविनोद का सम्यक चित्र उतारनेवाले विभिन्न स्थल गिनाये गये हैं। चैत और वर्षाऋतुओं का मनोहारी वर्णन है। प्राकृतिक परिवेश के मनोहारी वर्णन नें लेखक को बडी सफलता मिली है। प्रस्तुत उपन्यास में सामाजिक परिवेश का भी अच्छा वर्णन देखने को मिलता है। सामाजिक जीवन के चित्रण में वहाँ के संस्कारों, परंपराओं, मान्यताओं, अंधविश्वासों, अंतर्गत संघर्षों आदि का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। कछार अंचल में बसे लोगों में देवी-देवताओं, जादू-टोना, भूत-प्रेत, पूजा-पाठ, जंतर-मंतर आदि पर विश्वास पाया जाता है। गेंदा,बिंदिया के प्रसंग इसके उदाहरण हैं। ग्रामांचल में नारी के प्रति अत्यंत दूषित भाव पाया जाता है। न्याय के प्रति असमानता दिखायी देती है। नारी को समाज के विभिन्न रीति-रिवाजों तथा अत्याचारों का सामना करना पडता है। बिंदिया उसका उत्तम उदाहरण है। नारी के विवाह के संबंध में भी अनेक समस्याएँ होती हैं। उनमें से दहेज-प्रथा सबसे प्रमुख है। दहेजप्रथा में आर्थिक उपलब्धि की अपेक्षा प्रतिष्ठा का भाव प्रमुख रहता है। यहाँ आर्थिक दुरवस्था का भी बडा मार्मिक चित्रण किया गया है। जमींदार, मुखिया आदि के द्वारा किया जानेवाला निर्मम शोषण भी पर्याप्त मात्रा में चित्रित है। अंचलवासियों की दरिद्रावस्था उनके चिथडे, उनके खंडहर जैसे घर उनके भोजन की अव्यवस्था, उनके टूटते हुए स्वप्न आदि का बडा ही हृदयस्पर्शी चित्रण उपन्यास में सर्वत्र मिलता है। पुलिस दरोगा और सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई धाँधलियाँ रिश्वतखोरी आदि का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। परंतु ग्रामों में नवजागरण की लहर दौडने लगी है। हरिजनों में भी काफी जागरण पैदा हुआ है। जमींदारी उन्मूलन की आशा निर्माण हो रही है। नीरू, गनपति, हरिजन नेता फेंकू आदि के माध्यम से लेखक ने इस पुनर्निर्माण के प्रति संकेत किया है। 15 अगस्त 1947 को 'सुराज' की प्राप्ति होती है और अंचलवासियों में यह भावना जाग उठती है कि ये दीवारें टूटेंगी। नये सपने खिलेंगे। इससे स्पष्ट होता है कि देश काल वातावरण के चित्रण में लेखक पूर्ण सफल हो गए हैं।

पंचम अध्याय में भाषा-शैली आदि पर विवेचन किया है।

भाषा भावों की अभिव्यक्ति है। भाषा के ही माध्यम से पात्र बोलते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। भाषा तत्व के आँचलिकता के प्राबल्य से ही उपन्यास को आँचलिकता की संज्ञा मिलती है। आँचलिक उपन्यास आँचलिक जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत करता है। उन्हें यथार्थता प्रदान करने के लिए आँचलिक भाषा, उच्चारण तथा वहाँ के निवासियों के वार्तालाप की विशिष्टता की अवधारणा करता है।

'पानी के प्राचीर' पूर्वी उत्तर प्रदेश के कछार अंचल की पृष्ठभूमि पर लिखा हुआ उपन्यास है। इसमें सामान्यत: साहित्यिक हिंदी का ही प्रयोग हुआ है। प्रदेश विशेष का लोक रंग दिखाने के लिए पूर्वी मुहावरों और शब्दों का व्यापक प्रयोग किया गया है। मिश्रजी की भाषिक संरचना की सबसे बडी विशेषता बिंबात्मकता और लाक्षणिक प्रयोग है। उपन्यास के नामों में भी लाक्षणिक प्रयोग का चमत्कार है। उदा,'पानी के प्राचीर','जल टूटता हुआ','सूखता हुआ तालाब '। यहाँ 'जल' को जीवन का प्रतीक मानकर लेखक कभी उसे समस्याओं के प्राचीर में घिरा देखता है, कभी उसे खंडित और विभाजित होते तथा कभी उसे सूखते,समाप्त होते हुए। लेखक की भाषा सामान्यत: बोलचाल की भाषा है, जिसमें आँचलिक भाषा के शब्दों, संज्ञाओं, विशेषण तथा क्रियाओं आदि का गहरा पुट है। आँचलिक भाषा के मुहावरों और विशेषकर लोकोक्तियों के प्रयोग ने मिश्रजी की भाषा को आँचलिक रंग में रंगकर आँचलिक यथार्थ की अभिव्यक्ति में बडी मदद दी है। वैसे भाषा का स्वाभाविक रूप वार्तालापों में व्यक्त हुआ है, फिर भी स्थानीयता के विशेष आग्रह के कारण भाषा कहीं-कहीं इतनी क्लिष्ट हो गई है कि लेखक को उसके अनुवाद खडी बोली में देने पडे हैं। वैसे इसप्रकार के जटिल वार्तालापों के खडी बोली में रूपांतर अवश्य हैं। लेखक ने लोकगीतों के रूपांतर नहीं दिए हैं। लोकगीतों का रूपांतर देना बहुत जरूरी था। परिणामस्वरूप आकलन के अभाव में इन लोकगीतों का प्रभाव कुछ कम हो गया है। उपन्यास में कई स्थलोंपर भाषा भावुकतापूर्ण हो गयी है। उपन्यास में लोकगीतों की संयोजना आँचलिक भाषा के मधुर रूप को अभिव्यक्त करती है। लोकगीतों और लोकभाषा का प्रयोग बडा ही सर्जनात्मक है। डॉ, ज्ञानचंद गुप्त के शब्दों में सारा उपन्यास भाषिक प्रयोंगो से व्याप्त है, जिसमें विभिन्न ध्वनियाँ, मिटटी की सोंधी गंध, भूखंडों की प्राकृतिक बनावट, खेत-खलिहानों की रंगत और मौसमी हवाओं के झोंकें, प्रकृति के कोप-कार्य आदि के अंकन से भरा है। उपन्यास में तो पूरे साल के बदलते हुए मौसम के अनुरूप बदलते हुए प्राकृतिक परिवेश तथा जनमानस के उद्वेलनों को लोकगीतों के माध्यम से ही व्यक्त किया गया है। लोकभाषा की कुछ बडी ही अछूती उपमाएँ भाषा संरचना में नयी जान डाल देती हैं।

कथोपकथन में व्यक्तिगत रूप की अपेक्षा सामूहिक रूप ही अधिक प्रबल है क्यों कि ये वार्तालाप किसी एक के नहीं सामूहिक समाज के शील का प्रकाशन करते हैं। ये व्यक्ति चरित्र नहीं, वर्ग चरित्र हैं। समूह संवादों की संयोजना उपन्यास की प्रमुख विशेषता है। आँचलिक शिल्प के अनुसार उपन्यास की कथा में बिखराव है। अत: कथानक एक दिशा प्रवाही नहीं है। फिर भी विभिन्न कथा सूत्रों को संश्लिष्ट रूप देने का प्रयास है। खंडचित्रों एवं शब्दचित्रों से समन्वित इस कथानक में प्रतीकात्मक विन्यास भी देखा जा सकता है। शीर्षक की प्रतीकात्मकता तो बडी ही लक्षणीय है। विभिन्न पात्र विभिन्न प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। उपन्यास के विविध एवं बहुल पात्र लहरों की भाँति पांडेपुरवा नदी के व्यक्तित्व को विविध आयामों एवं कोणों में प्रस्तुत करते हैं। आँचलिक उपन्यासों की एक विशेषता के अनुसार लेखक का स्वर आशावादी है तथा गाँव के पुनर्निर्माण का स्वर है। तात्पर्य भाषा तथा शैली की दृष्टि से उपन्यास एक सफल रचना मानी जा सकती है।

षष्ठ अध्याय में समस्याओं का विश्लेषण है।

'पानी के प्राचीर' में गोरखपुर जिले में कछार अंचल के रूप में एक विशाल भू-भाग की विभिन्न समस्याएँ चित्रित हैं। युगों से यह प्रदेश केवल विवशता, अभाव और संघर्ष के रूप में शेष रह गया है। संसार के सारे सूत्रों से यह प्रदेश कटा हुआ है। बाहर के नागरी जीवन की भौतिक सुविधाओं से यह पूर्णत: वंचित है। भौतिक असुविधाओं से व्याप्त इस प्रदेश को गुलामी ने और जकड लिया है। भौगोलिक दुष्परिणामों से जूझना पडता है। ऐसे अंचल पिछडेपन के प्रतीक हैं और इनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याएँ सदैव मुँह बाएँ खडी रहती हैं। सामाजिक समस्या के अंतर्गत अंधश्रध्दा, भूत-प्रेत आदि में विश्वास, वर्गगत विद्वेष जातिभेद, आदि का सम्यक् चित्र लेखक ने खींचा हैं। ग्रामीण अंचल आर्थिक रूप से सबसे अधिक पिछडा व साधनहीन माना जाता है। ब्रिटिश सरकार की कूट नीति के परिणामस्वरूप इस कृषिप्रधान देश में कृषकों की स्थिति ही अत्यंत शोचनीय बन गई हैं। शोषण की समस्या ग्रामांचल की जनता का रोग है। न सडकों का प्रबंध है, न शिक्षा की कोई व्यवस्था हैं, न भोजन का पर्याप्त प्रबंध है। राजनैतिक तथा शासन संबंधी षडयंत्र भी ग्रामांचलों के लिए बडा अभिशाप हैं। पुलिसों के हथकंडे, रिश्वतखोरी ये आये दिन की बातें हैं। तभी यह धारणा यहाँ घर कर बैठी है कि इस वीरान प्रदेश में नेता आतें हैं केवल वोट माँगने, सरकारी कर्मचारी आते हैं लोगों को लडाकर अपना उल्लू सीधा करने। रक्षक ही भक्षक बन जाते हैं। अत: सर्वत्र निराशा का ही घना कुहरा है।

फिर भी राजनैतिक चेतना के फलस्वरूप इन ग्रामों में कुछ उथल-पुथल मचने लगी है। स्वतंत्रता संग्राम जोर पकड रहा हैं। और लोगों की आशा बँधती है कि पानी की ये दीवारे टूटेंगी ! नये सपने खिलेंगे !! नई रोशनी लहराएगी !!!

अन्य आँचलिक उपन्यासकारों के अनुसार 'पानी के प्राचीर' में भी मिश्रजी का स्वर आशावादी और गाँवों के पुनर्निर्माण की भावना से युक्त हैं। 'पानी के प्राचीर' में लेखक को प्राचीरों के टूटने की आशा हैं। फिर भी लेखक ने ही यह प्रशन उठाया है कि क्या वास्तव में उन आशाओं की पूर्ति हुई ? स्वाधीनता प्राप्ति के अवसर पर हमने पूरे उल्लास के साथ अनुभव किया था कि पानी के प्राचीर अब टूटेंगे ही। ये प्राचीर टूटे कि हमारी उम्मीदें टूटीं इसका परिचय इस उपन्यास के दूसरे भाग में देने का प्रयास किया जाएगा। मिश्रजी ने अपने दूसरे उपन्यास 'जल टूटता हुआ ' की भूमिका में इसका उल्लेख किया हैं। 'पानी के प्राचीर' स्वतंत्रता पूर्व का उपन्यास है तो 'जल टूटता हुआ 'स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का। वैसे भौतिक उन्नति के रूप में परिवर्तन का उज्ज्वल पक्ष दिखाई देता हैं। परंतु मानसिकता के स्तर पर आंतरिक विघटन का व्यापक विष, भ्रष्टाचार, अनाचार, बेईमानी, घूसखोरी और मानवीय संबंधों में विघटन आदि के रूप में फैल गया है। फिर भी आँचलिक कथाकार इस वीमिषिका में भी आशा की डोर से बँधा होता है। 'जल टूटता हुआ ' के सतीश के शब्दों में वहाँ सब कुछ टूट रहा है, मूल्य टूट रहें हैं, सत्य टूट रहा है --- मगर नहीं एक नया गाँव भी बन रहा है --- किसानों का, मजदूरों का। तात्पर्य लेखक को ग्राम यथार्थ को उसके वास्तविक रूप में प्रतिबिंबित करने में और मानव मूल्यों के प्रति अटूट श्रध्दा करने में बहुत हदतक सफलता मिली हैं।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ

उपन्यास के अनुशीलन के प्रारंभ में मेरे मन में जो प्रश्न उठे थे,-उनके उत्तर आगे दिए हैं।

1) उपन्यास में आँचलिकता का निर्वाह कहाँतक हुआ है ?

उपन्यास में आँचलिकता का पूर्ण निर्वाह हुआ है । पांडेपुरवा का समग्र अंचल यहाँ चित्रांकित हुआ है । अंचल के प्राकृतिक-भौगोलिक,सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनैतिक परिवेश का सम्यक चित्रण उपन्यास में हुआ है। भाषा की दृष्टि से भी आँचलिकता के स्थानीय रंग को बडी सफलता से अभिव्यक्त किया गया है। लेखक आँचलिकता के निर्वाह में पूर्णत: सफल हुआ है।

2) उपन्यास में अंचल की किन समस्याओं का उद्‌घाटन हुआ है ?

उपन्यास में अंचल की भौगोलिक परिवेश जनित सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक आदि विभिन्न समस्याओं का सम्यक् चित्रण है और सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन के प्रति भी संकेत है। उपन्यास के अंत में लेखक को प्राचीरों के टूटने की आशा है।

3) क्या लेखक निराशावादी हैं?

लेखक ने गोरखपुर के एक ही कछार अंचल की पृष्ठभूमि पर 'पानी के प्राचीर' के क्रम में ही 'जल टूटता हुआ' उपन्यास लिखा है। पहला स्वतंत्रता - प्राप्ति पूर्व का है तो दूसरा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त लेखक को 'प्राचीरों के टूटने' के बजाय अपनी 'उम्मीदों के टूटने' की ही अनुभूति हुई और लेखक के मन में व्याकुलता निर्माण हुई। परंतु भौतिक समृध्दियों के साथ साथ लोगों के मानसिक परिवर्तन की भी आशा जागृत हुई और नये गाँव के निर्माण के स्वप्न दिखाई दिए। तात्पर्य लेखक को ग्राम यथार्थ को उसके वास्तविक रूप में प्रतिबिंबित करने में और मानव मूल्यों के प्रति अटूट श्रध्दा व्यक्त करने में बहुत हदतक सफलता मिली है। साहित्य का मूल लक्ष्य भी यही होता है।

<u>अनुसंधान की नई दिशाएँ -</u>

आँचलिक उपन्यास साहित्य पर अनुसंधान की दृष्टि से विपुल कार्य किया जा सकता है। मेरी दृष्टि में निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है -

1)''कछार -अंचलीय उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।''
2)''डॉ. रामदरश मिश्र जी के उपन्यास साहित्य का समग्र अध्ययन ।''
ये केवल कुछ सुझाव हैं।